

International Institute of Information Technology
mid-semester examination: Monsoon 2024
HS1.303 : Readings from Hindi Literature

Time: 1½ Hr.

Max. marks: 25

OPEN BOOK: handwritten/print material allowed; no electronic material is allowed

1. नीचे दी गई कविताओं में से किसी एक के विषय-वस्तु, शैली और रचना के रूप पक्ष पर विस्तार से लिखिए, और पहले पढ़ी कविताओं के साथ तुलनात्मक विवेचन (comparative discussion) कीजिए।

8

भारतीय समाज / भवानीप्रसाद मिश्र

कहते हैं

इस साल हर साल से पानी बहुत ज्यादा गिरा
पिछले पचास वर्षों में किसी को
इतनी ज्यादा बारिश की याद नहीं है।

कहते हैं हमारे घर के सामने की नालियाँ
इससे पहले इतनी कभी नहीं बहीं
न तुम्हारे गाँव की बावली, ^{pond} का स्तर
कभी इतना ऊँचा उठा
न खाइयाँ कभी ऐसी भरीं, न खन्दक
न नरमदा कभी इतनी बड़ी, न गड्ढक।

पंच-वर्षीय योजनाओं के बांध पहले नहीं थे
मगर वर्षा में तब लोग एक गाँव से दूर-दूर के गाँवों तक
तिर पर सामान रख कर यों टहलते नहीं थे
और फिर लोग कहते हैं
जिंदगी पहले के दिनों की बड़ी प्यारी थी
सपने हो गये थे दिन जो रंगीनियों में आते थे
रंगीनियों में जाते थे
जब लोग महफिलों में बैठे बैठे
रात भर पक्के गाने गाते थे
कम्बख्त ^{unfortunate} हैं अब के लोग, और अब के दिन वाले
क्योंकि अब पहले से ज्यादा पानी गिरता है
और कम गाये जाते हैं पक्के गाने।

और मैं सोचता हूँ, ये सब कहने वाले
हैं गहरों के रहने वाले
इन्हें न पचास साल पहले खबर थी गाँव की
न आज है
ये गहरों का रहने वाला ही
जैसे भारतीय समाज है।

दूसरा बनबास / कैफ़ी आज़मी

राम बन-बास ^{ban-bas} से जब लौट के घर में आए
याद जंगल बहुत आया जो नगर में आए
रत्नस-ए-दीवानगी ^{ratnas-e-diwangi} ऑगन में जो देखा होगा
छे दिसम्बर को श्री राम ने सोचा होगा
इतने दीवाने कहाँ से मेरे घर में आए
जगमगाते थे जहाँ राम के क्रदमों के निशान
प्यार की काहकशाँ ^{long-trails} लेती थी अंगड़ाई ^{angdaai} जहाँ
मोड़ नफ़रत के उसी राहगुज़र ^{raah-guzar} में आए
धर्म क्या उन का था, क्या ज्ञात थी, ये जानता कौन
घर न जलता तो उन्हें रात में पहचानता कौन
घर जलाने को मेरा लोग जो घर में आए
शाकाहारी थे मेरे दोस्त तुम्हारे खंजर ^{daggers}
तुम ने बाबर की तरफ़ फेंके थे सारे पत्थर
हैं मिरे सर की खता ^{khata}, फ़ाहम जो सर में आए
पाँव सरजू ^{river in Ayodhya} में अभी राम ने धोए भी न थे
कि नज़र आए वहाँ खून के गहरे धब्बे
पाँव धोए बिना सरजू के किनारे से उठे
राम ये कहते हुए अपने द्वारे से उठे
राजधानी की फ़ज़ा ^{atmosphere} आई नहीं रास ^{not Rasing} मुझे
छे दिसम्बर को मिला दूसरा बन-बास मुझे।

(दूसरी ओर देखें)

2. पढ़ी गई कहानियों के आधार पर नीचे दिए गए कथन पर टिप्पणी कीजिए (पक्ष और विपक्ष में - दोनों तरह)
Based on the stories you have read, comment on the following statement (both pro and con):

'रचना और विचार के संबंध इतने जटिल क्यों हैं?

क्या यह सच है कि विचार के बिना रचना सिर्फ़ क्रलम-घसीटी या रिपोर्टिंग होती है और विचार, कला को मारकर स्वयं हावी हो जाता है? धर्म, संस्कृति, कला, साहित्य सभी का दावा है कि वे हमें 'बेहतर मनुष्य' बनाते हैं, वे न हों तो मनुष्य सींग-पूँछ के बिना नितान्त पशु हैं। अंततः ये सभी उपक्रम कहीं न कहीं विचार ही हैं, और विचार हमें अपनी भौतिक सीमाओं से उठाकर बृहत्तर चिंताओं तक ले जाते हैं। हम सिर्फ़ अपने लिए नहीं, मनुष्य मात्र के विकास और उन्नयन की बात सोचते हैं। जिसे हम मानवीयता कहते हैं, वह भी कहीं मानव-कल्याण के लिए हमारी संवेदनाओं का सार्वभौमिक विस्तार है। यह एक ऐसा नैतिक बोध है, जो हमारे सारे कार्य-कलाप को साथी मनुष्य के संदर्भ में निर्धारित करता है। जो मेरे लिए गलत या सही है वह दूसरे के लिए भी ऐसा ही है। मानवीयता, समस्त मानवता के लिए उच्चतर मूल्यों की स्वीकृति और स्थापना है, नैतिक मूल्यों की चेतना मानव-कल्याण के समग्र बोध से शुरु होती है....'

'Why is the relation between creativity and ideology so complex?

Is it true that a written work without ideology is a mere collection of strokes of pen or reporting of events, and ideology destroys art, imposing itself? Religion, culture, art, literature - all of these claim that they make us 'better human beings'; devoid of them a human is nothing but an animal without the horns and a tail. In the final analysis, these are all ideologies; and ideas elevate us to broader issues beyond our physical constraints. We think not merely for ourselves, we begin to think about every human being. What we call humanity, that must be a universal expansion of our sensitivities towards human welfare. It is such a moral learning, that determines all that we do in reference to our fellow humans. What holds true or wrong for myself, must be the same for others too. Being humane is the acceptance and coming together of higher values for the entire humanity. Moral awareness begins with a holistic understanding of human welfare....'

8

3. समकालीन स्त्री-लेखन की विविधता (diversity) पर चर्चा करें। (विषय-वस्तु में विविधता : बेंडर, सामाजिक सरोकार, घर परिवार और निजी सवाल आदि; भाषा-शैली में विविधता)

7

4. i) संस्थान के पुस्तकालय में उपलब्ध किन्हीं दो साहित्यिक पत्रिकाओं के नाम लिखिए।

(ii) हैदराबाद के किसी एक शायर का नाम और उनकी रचना की पहली पंक्ति लिखें।

1+1

Time: 3 Hrs.

Max. marks: 50

This is an open book (print or hand-written only - no digital device) exam

1. नीचे दी गई पंक्तियों में से किन्हीं तीन के बारे में लिखिए कि (i) ये किस रचना से ली गई हैं और (ii) रचना के लेखक/कवि का नाम क्या है :-

- (क) वजह सिर्फ वह हवा है जो हम दोनों के बीच से गुजरती है। → *Adhhe Adhoore*
(ख) और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा ... *Mujh se pehli hi mohabbat*
(ग) पत्र पा कर मुझे खटका हुआ। कौन-सी मृगतृष्णा इसे फिर से वापस खींच लाई है?
(घ) कौन कहता है? कौन? कौन वहशी? कि उन्होंने बग़ैर किसी इच्छा के जन्म दिया?
(ङ) क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन खत्म हो गए हैं एकाएक ... तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में? 2+2

2. नीचे दी गई कविताओं में से किसी एक पर विस्तार से चर्चा करें। विषय-वस्तु, रूप के अलावा सामाजिक और अन्य संदर्भों पर भी विस्तार से लिखें। समकालीन अन्य कवियों की रचनाओं के साथ कविता का तुलनात्मक विवेचन भी कीजिए। 10

मेरी दुनिया के तमाम बच्चे - अदनान कफ़ील दरवेश

वो जमा होंगे एक दिन और खेलेंगे एक साथ मिलकर
वो साफ़-सुथरी दीवारों पर
पेंसिल की नोक रगड़ेंगे
वो कुत्तों से बतियाएँगे
और बकरियों से / और हरे टिट्टों से
और चींटियों से भी...
वो दौड़ेंगे बेतहाशा* non-stop
हवा और धूप की मुसलसल निगरानी* में constant watch
और धरती धीरे-धीरे
और फैलती चली जाएगी
उनके पैरों के पास...

देखना!

वो तुम्हारी टैंकों में बालू भर देंगे एक दिन
और तुम्हारी बंदूकों को
मिट्टी में गहरा दबा देंगे
वो सड़कों पर गड्ढे खोदेंगे और पानी भर देंगे
और पानियों में छपा-छप लोटेंगे...
वो प्यार करेंगे एक दिन उन सबसे
जिनसे तुमने उन्हें नफ़रत करना सिखाया है

वो तुम्हारी दीवारों में
छेद कर देंगे एक दिन
और आर-पार देखने की कोशिश करेंगे
वो सहसा चीखेंगे!
और कहेंगे :
"देखो! उस पार भी मौसम तो हमारे यहाँ जैसा ही है"
वो हवा और धूप को अपने गालों के गिर्द
महसूस करना चाहेंगे
और तुम उस दिन उन्हें नहीं रोक पाओगे!
एक दिन तुम्हारे महफूज़* घरों से secure
बच्चे बाहर निकल आएँगे
और पेड़ों पे घोंसले बनाएँगे
उन्हें गिलहरियाँ काफ़ी पसंद हैं
वो उनके साथ ही बड़ा होना चाहेंगे...
तुम देखोगे जब वो हर चीज़ उलट-पुलट देंगे
उसे और सुंदर बनाने के लिए...
एक दिन मेरी दुनिया के तमाम बच्चे
चींटियों, कीटों, नदियों, पहाड़ों, समुद्रों
और तमाम वनस्पतियों के साथ मिलकर धावा बोलेंगे
और तुम्हारी बनाई हर एक चीज़ को
खिलौना बना देंगे...

(कृपया पन्ना पलटें)

हम औरतें - वीरेन डंगवाल

रक्त से भरा तसला* है pan/container
रिसता* हुआ घर के कोने-अँतरों में leaking

हम हैं सूजे हुए पपोटे* swollen eyelids
प्यार किए जाने की अभिलाषा
सब्जी काटते हुए भी
पार्क में अपने बच्चों पर निगाह रखती हुई प्रेतात्माएँ
हम नींद में भी दरवाज़े पर लगा हुआ कान हैं

दरवाज़ा खोलते ही
अपने उड़े-उड़े बालों और फीकी शक्ल पर
पैदा होने वाला बेधक अपमान हैं

(हम हैं इच्छा मृग*) deer chasing desires
वंचित¹ स्वप्नों की चरागाह² में तो 1deprived 2pasture
चौकड़ियों³ मार लेने दो हमें कमबख्तों⁴! 3long jumps
4wretched fellow

3. पढ़ी रचनाओं के आधार पर इस कथन पर उदाहरणों के साथ टिप्पणी कीजिए:

✓ दलितों के लेखन में हमें ललित (aesthetic) लेखन नहीं ढूँढना चाहिए। 'We should not look for aesthetic perfection in Dalit literature.'

या

'साज़-नासाज़' और 'चिमगादड़ें' कहानियों में से किसी एक के बारे में इन सवालों का जवाब लिखिए: कहानी किस ने लिखी है? कहानी के केंद्र में कौन से विचार हैं? रचना समाज के किन पक्षों की ओर संकेत करती है? कहानी की संरचना (structure) और शैली पर विस्तार से लिखिए। 10

✓ 4. देवी प्रसाद मिश्र या कुमार अंबुज की किसी एक कविता को लेते हुए आज की और पिछली पीढ़ियों के रचनाकारों की दृष्टि और शैली पर तुलनात्मक टिप्पणी कीजिए। 3+3

✓ 5. फणीश्वर नाथ रेणु और निर्मल वर्मा की पढ़ी गई कहानियों में प्रकृति की तस्वीर कैसी आँकी गई है, विस्तार से लिखें। 6

✓ 6. 'साहित्य समाज का दर्पण (mirror) है।' - पढ़े गए नाटकों के आधार पर इस कथन पर विस्तार से चर्चा करें। 6
Aadhe Aadhe .

7. क्या हिंदी में स्त्रीवादी लेखन कोई नया समाज बनाने के संकल्प से लिखा जा रहा है? Is Feminist writing in Hindi aiming towards constructing a new social structure? पढ़ी गई रचनाओं के आधार पर इस पर टिप्पणी करें।

बोनस (1) - एक क्लास के दौरान हमने एक कवि से फ़ोन पर बात की थी। कवि का नाम क्या था और जिस कविता पर बात की थी, उसका शीर्षक क्या था? 8

Kroanta
Kavya, Munde,
Samita Singh.

18.02.25.

The following are the English translations of the questions only. For excerpts accompanying Q.1 and 2, see the question paper.

1. Pick any three of the following sentences and write (i) the title of the work from where these are taken, and (ii) the name of the writer/poet.

.....

2. Discuss in detail any one of the following poems. Other than the subject matter, form, discuss social and other contexts also. Provide a comparative discussion with works of other contemporary poets.

....

3. Based on the works studied for the course, discuss the statement : We should not look for aesthetic perfection in Dalit literature.

OR

Answer the following for ANY ONE of the stories, साज - नासाज OR चिमगादड़े : Who is the writer?

What are the central ideas presented in the story? Which features of our society does the work point towards?

Write in detail about the structure and style of the story.

4. Pick ANY ONE poem by either देवीप्रसाद मिश्र OR कुमार अंबुज and discuss comparatively on the vision and style of poets from the present and the earlier generations.

5. Write in detail on how Nature is portrayed in the stories by Phanishwarnath Renu and Nirmal Varma studied in the course.

6. Based on the plays studied in the course, discuss : 'Literature reflects social realities'.

7. Based on the works studied for the course, discuss : Is Feminist writing in Hindi aiming towards constructing a new social structure?

Bonus : During one class, we talked to a poet over phone about a poem written by him. What was his name and what was the title of the poem?